इकाई-4

विश्व युद्धों की इतिहास

प्रथम विश्वयुद्ध (1914-1918) :

विश्व इतिहास में 1914 का वर्ष एक ऐसे युद्ध के लिए उल्लेखनीय है, जिसने सम्पूर्ण विश्व को अपनी आगोश में ले लिया और युद्धरत देशों ने अपने सम्पूर्ण संसाधन इसमें झोक दिए। विश्व के लगभग तमाम देश इससे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुए। इस युद्ध ने कई देशों के राजनैतिक, आर्थिक स्थिति और नक्शा बदल दिए। इस युद्ध के कारणों को निम्नलिखित रूप में खोजा जा सकता है–

साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा :

औद्योगिक क्रांति के बाद से ही बाजारों के विस्तार के लिए उपनिवेशों के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो गयी थी। ऐसे में पूर्व के साम्राज्यवादी आधिपत्य को चुनौती दिए बिना नए औपनिवेशिक क्षेत्र का निर्माण संभव नहीं था। इस दौड़ में जर्मनी और इटली का प्रवेश बहुत बाद में हुआ। इस कारण उन्हें कम ही उपनिवेश हाथ लगे लेकिन उनकी साम्राज्यवादी लिप्सा रुकने का नाम नहीं ले रही थी। 1914 ई० तक जर्मनी औद्योगिक क्षेत्र में काफी प्रगति कर चुका था। वह ब्रिटेन और फ्रांस को भी काफी पीछे छोड़ चुका था। जर्मनी को भी उद्योग के लिए कच्चे माल और फिर तैयार माल के लिए बाजार की आवश्यकता थी। किन्तु एशिया और अफ्रिका के अधिकांश हिस्से को पुराने साम्राज्यवादी देश आपस में बाँट चुके थे। ऐसी परिस्थिति में जर्मन साम्राज्यवादियों ने पतनशील तुर्की साम्राज्य की अर्थव्यवस्था पर अपना नियंत्रण करना चाहा। इसके लिए जर्मनी ने तुर्की के सुल्तान से बर्लिन से बगदाद तक रेलवे लाइन बिछाने की योजना पर स्वीकृति चाही। जर्मनी की इस योजना का फ्रांस तथा रूस ने विरोध किया।

इधर 1905 के रूस-जापान युद्ध में जापान के विजय से जापान की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा और परवान चढ़ने लगी थी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक अमेरिका भी एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभर कर सामने आ चुका था और वह व्यापार की स्वतंत्रता बनाए रखने में दिलचस्पी ले रहा था, दूसरी ताकत के उभरने से उसके हितों को खतरा था।

उग्र राष्ट्रवाद :

19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक यूरोप के देशों में राष्ट्रीयता का संचार उग्र रूप से होने लगा। समान जाति, धर्म, भाषा और ऐतिहासिक परम्परा के लोग एक साथ मिलकर अलग देश का निर्माण चाहने लगे। तुर्की साम्राज्य तथा आस्ट्रिया-हंगरी में अधिकांश निवासी स्लाव जाति के थे। उनलोगों ने सर्वस्लाव आन्दोलन की शुरूआत की जो इस सिद्धान्त पर आधारित था कि यूरोप के सभी स्लाव जाति के लोग एक राष्ट्र हैं। इसने आस्ट्रिया-हंगरी का रूस के साथ सम्बंध कटु बना दिया। इसी तरह सर्वजर्मन आन्दोलन शुरू हुआ जिसका लक्ष्य बाल्कन प्रायद्वीप में जर्मन साम्राज्य का विस्तार था। इस प्रकार उग्र राष्ट्रवाद ने यूरोप के देशों के आपसी सम्बन्ध को तनावग्रस्त बना दिया।

सैन्यवाद :

यूरोपीय देश अपनी सैनिक शक्ति पर सारा ध्यान केन्द्रित कर रहे थे। फ्रांस, जर्मनी आदि प्रमुख यूरोपीय देश अपनी राष्ट्रीय आय का लगभग 85% सैनिक तैयारियों पर व्यय कर रहे थे। 1913-14 ई० में फ्रांस के पास लगभग 8 लाख, जर्मनी में 7 लाख 60 हजार और रूस में 15 लाख की स्थायी सेना थी। जल सेना के क्षेत्र में शुरू से ही इंगलैंड का आधिपत्य था, जर्मनी ने इसको चुनौती के रूप में लिया और इंगलैंड को नीचा दिखाने के लिए जहाजी बेड़ा बनाना शुरू किया । 1912 में जर्मनी ने इम्परेटर नामक जहाज बनाया जो उस समय का सबसे बड़ा जहाज था । इस प्रकार जर्मनी, इंगलैंड के बाद दूसरा शक्तिशाली राष्ट्र बन गया।

गुटों का निर्माण :

साम्राज्यवादी लिप्सा के शिकार शक्तिशाली देश अपने-अपने हितों के अनुरूप गुटों का निर्माण करने लगे थे। एक समान स्वार्थ को केन्द्र में रखकर राष्ट्र रणनीति तय करने लगे थे। परिणामस्वरूप सम्पूर्ण यूरोप गुटों में बँट गया। यूरोप धीरे-धीरे सैनिक शिविर का रूप लेते जा रहा था। यूरोप में यह प्रक्रिया उन्नीसवीं शताब्दी से ही जारी थी। यूरोप में गुटबन्दी का

जन्मदाता जर्मनी के चांसलर बिस्मार्क को माना जाता है। उसने सन् 1879 में आस्ट्रिया के साथ द्वैध संधि की। 1882 ई० में एक त्रिगुट (ट्रिपल एलांयस) बना जिसमें जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी और इटली शामिल हुए। यह त्रिगुट बिस्मार्क ने फ्रांस के विरुद्ध बनाई थी। यद्यपि इटली की विश्वसनीयता संदिग्ध थी, क्योंकि उसका मुख्य उद्देश्य यूरोप में आस्ट्रिया-हंगरी से कुछ इलाके छीनना और फ्रांस की सहायता से त्रिपोली को जीतना था। इस त्रिगुट के विरोध में फ्रांस, रूस और ब्रिटेन ने 1907 ई० में एक त्रिदेशीय संधि (ट्रिपल एतॉत) बनाई। यह सामान्य हितों और समझदारी पर आधारित ढीला-ढाला गठजोड़ था। इन दोनों गुटों की उपस्थिति ने युद्ध की भयावहता को तय कर दिया।

घटनाक्रम :

1914 ई० में प्रारंभ हुए प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व के वर्षों में इस तरह से घटनाएँ घटित हो रही थी, जैसे- मोरक्को का प्रश्न हो या बाल्कन प्रायद्वीप का मुद्दा ये सभी युद्ध को निकट लाने का कार्य कर रहे थे। 1904 ई० में आपसी समझौते के फलस्वरूप ब्रिटेन को मिस्र में उपनिवेश स्थापित करने की छूट मिली और फ्रांस को मोरक्को प्राप्त हुआ। इससे जर्मनी को बड़ा क्षोभ हुआ। जर्मनी, मोरक्को की स्वतंत्रता की दुहाई दे रहा था और फ्रांस अपने हित के आगे अंधा बना हुआ था। 1911 ई० में फ्रांस ने मोरक्को के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया।

1904 ई० में आस्ट्रिया ने तुर्की पर अपना अधिकार जमा लिया। इस क्षेत्र को सर्विया भी लेना चाहता था। वह बाल्कन क्षेत्र में एक संयुक्त स्लाव राज्य कायम करना चाहता था। इसके लिए उसे रूस का समर्थन प्राप्त था। रूस ने आस्ट्रिया को युद्ध छेड़ने की धमकी दी। इस पर जर्मनी खुलकर आस्ट्रिया के पक्ष में आ गया। अंततः रूस को पीछे हटना पड़ा, लेकिन इस घटना से रूस और जर्मनी में कटुता और बढ़ी। साथ ही जर्मनी, फ्रांस के प्रति भी उतना ही विषाक्त था। जर्मनी का चांसलर विस्मार्क फ्रांस को पंगु बना देना चाहता था। उसने फ्रांस के धनी प्रदेश **अल्सास** तथा **लारेन** पर अपना अधिकार कर लिया था। जर्मनी ने मोरक्को में भी फ्रांस का डटकर विरोध किया था। फलतः यह खाई बढ़ती गयी और इसने विश्वयुद्ध को और नजदीक किया।

युद्ध की शुरूआत :

युद्ध की शुरूआत एक मामूली घटना से हुई। अगर सम्पूर्ण यूरोप गुटों में न बँटा होता और कटुता एवं विद्वेष का माहौल पहले से व्याप्त न होता तो शायद यह घटना नहीं हो पाती। **28 जून 1914** को आर्क ड्यूक फर्डिनेण्ड की बोस्निया की राजधानी साराजेवो में हत्या हो गई। आस्ट्रिया ने इस घटना के लिए सार्विया को जिम्मेवार ठहराया और सार्विया के समक्ष माँगें रखीं। सार्विया ने स्वीकार करने से इनकार कर दिया क्योंकि इसे वह स्वतंत्रता पर कुठाराघात समझता था। फलत: 28 जुलाई 1914 को आस्ट्रिया ने सार्विया के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। रूस ने सार्विया को पूर्ण सहायता का वचन दिया और युद्ध की तैयारी करने लगा। जर्मनी ने 1 अगस्त 1914 को रूस और 3 अगस्त 1914 को फ्रांस के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। फ्रांस पर दबाव डालने के लिए जर्मन सेनाएँ 4 अगस्त को बेल्जियम में घुस गईं। उसी दिन ब्रिटेन ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी और इस तरह यह व्यापक रूप धारण करने लगा। इसी क्रम में दूसरे देश भी लड़ाई में शामिल होते गये। जापान ने सुदूर-पूर्व में जर्मनी के उपनिवेश हथियाने के उद्‌देश्य से जर्मनी के खिलाफ यृद्ध की घोषणा कर दी। तुर्की और बुल्गारिया जर्मनी की तरफ हो गए। त्रिगुट का सदस्य होने के बावजूद इटली कुछ समय तक तटस्थ रहा, अंतत: वह भी जर्मनी और आस्ट्रिया-हंगरी के खिलाफ युद्ध में शामिल हो गया। इस प्रकार आर्क ड्यूक **फर्डिनेण्ड** की हत्या युद्ध के तात्कालिक कारण के रूप में सामने आया।

युद्ध का अंत और शांति-संधियाँ :

1917 ई० में एक और महत्वपूर्ण घटना घटी, वह था रूस का युद्ध से अलग हो जाना। अब तक रूस के 6 लाख से अधिक सैनिक मारे जा चुके थे। रूस की अर्थव्यवस्था भी अत्यन्त दयनीय हो गई थी। बोल्शेविक सरकार के सत्ता में आते ही, इसके नेता **लेनिन** ने एक विज्ञप्ति जारी की, जिसमें दूसरे के क्षेत्रों को हथियार बिना और युद्ध के हर्जाने लिए बिना शांति स्थापित करने के प्रस्ताव रखे गये थे। यद्यपि ये शर्तें और युद्ध से रूस का हटना, उसकी अपनी आंतरिक व्यवस्था की अपरिहार्यता थी, लेकिन जर्मनी ने इसे रूस की कमजोरी माना और कुछ मुश्किल शर्तें रूस के समक्ष रख दिया। इसके बावजूद भी रूस इसे स्वीकार कर युद्ध से हट गया। मार्च 1918 में रूस-जर्मनी एक शांति-संधि हुई और रूस युद्ध से पूर्णत: अलग हो गया।

रूस का युद्ध से हट जाने के बाद युद्ध समाप्ति की आवाजें उठने लगीं। युद्धरत देशों ने प्रकटत: तो अपनी इच्छा नहीं जाहिर की, लेकिन इन देशों की जनता ने युद्ध के खिलाफ आवाज उठाना शुरू कर दिया। जगह-जगह सैनिक विद्रोह होने लगे, रूस की नई सरकार से पूरे विश्व में आम जनता का मनोबल ऊँचा हुआ। युद्धरत देश की जनता अपनी ही सरकार के खिलाफ आवाज उठाने लगी। जर्मनी के यू नौका नामक पनडुब्बियों ने ब्रिटिश बन्दरगाह की तरफ जाने वाले जहाजों को डुबोना शुरू किया जिसमें 'लुसीतानिया' नामक जहाज को डुबाने से अमेरिका में प्रतिक्रिया हुई क्योंकि उसमें अमेरिकी नागरिक सवार थे। अमेरिका के मना करने पर भी जब जर्मनी ने अपनी कार्यवाही नहीं रोकी तब अमेरिका ने 6 अप्रैल 1917 को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। अमेरिका के युद्ध में शामिल होने से युद्ध की स्थिति ही बदल गई। जुलाई 1918 में ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका ने संयुक्त सैनिक अभियान आरंभ किया और जर्मनी तथा उसके सहयोगी देशों की हार होने लगी। बुल्गारिया सितम्बर में युद्ध से अलग हो गया। अक्टूबर में तुर्की ने आत्मसमर्पण कर दिया। आस्ट्रिया-हंगरी और जर्मनी में राजनीतिक असंतोष बढ़ रहा था। 3 नवम्बर 1918 को आस्ट्रिया तथा हंगरी के सम्राट ने आत्मसमर्पण कर दिया। जर्मनी में एक क्रांति फूट पड़ी और जर्मनी एक गणराज्य बन गया। जर्मन सम्राट कैसर विलियम द्वितीय पलायन कर हालैंड चल गया। नई जर्मन सरकार ने 11 नवम्बर 1918 को युद्ध विराम संधि पर हस्ताक्षर किए और इस प्रकार युद्ध समाप्त हो गया।

ऐसे में अमेरिका के राष्ट्रपति **वुडरो विल्सन** ने जनवरी 1918 में शांति का एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जो चौदह सूत्रों के नाम से चर्चित हुआ। इसमें राज्यों के बीच खुली बातचीत चलाना, जहाजरानी की स्वतंत्रता, हथियारों में कमी, बेल्जियम की स्वतंत्रता, फ्रांस को अल्सास तथा लॉरेन की वापसी, यूरोप में स्वतंत्र राज्यों की स्थापना, सभी राज्यों की स्वतंत्रता की जमानत के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना जैसी बातें शामिल थीं। इस प्रकार शांति-संधि में विल्सन के कुछ सूत्रों को शामिल किया गया।

वर्साय की संधि :

जनवरी और जून 1919 के बीच विजयी शक्तियों (मित्र राष्ट्रों) का एक सम्मेलन पेरिस के उपनगर वर्साय में और फिर पेरिस में हुआ। हालाँकि इस सम्मेलन में 27 देश भाग ले रहे थे, लेकिन तीन देश **ब्रिटेन, फ्रांस** और **अमेरिका** ही निर्णायक भूमिका निभा रहे थे। अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विल्सन, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लायड जार्ज और फ्रांस के प्रधानमंत्री

जार्ज क्लीमेंशु, ये ही तीन प्रमुख व्यक्ति थे जो शांति-संधि की शर्तें तय कर रहे थे और पराजित राष्ट्रों के मत्थे इसे मढ़ रहे थे। सम्मेलन में पराजित राष्ट्रों को कोई महत्व नहीं दिया गया। रूस को भी इस शांति-संधि प्रक्रिया से बाहर रखा गया। मुख्य संधि जर्मनी के साथ 28 जून 1919 को हुई। इसे **वर्साय की संधि** के नाम से जाना जाता है। पराजित जर्मनी को संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया गया। संधि में जर्मनी को युद्ध का जिम्मेवार बताया गया। फ्रांस को अल्सास-लारेन का क्षेत्र वापस दे दिया गया। जर्मनी की सार क्षेत्र की कोयला खदानों को 15 वर्ष के लिए फ्रांस को दे दिया गया तथा इसका प्रशासन राष्ट्रसंघ के अधीन कर दिया गया। जर्मनी को अपने युद्धपूर्व क्षेत्र का कुछ भाग डेनमार्क, बेल्जियम, पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया को भी देना पड़ा। राइन नदी की घाटी क्षेत्र को सेनारहित करने का फैसला किया गया। संधि के तहत जर्मनी की सेना 1 लाख तक सीमित कर दी गयी। उससे वायुसेना और पनडुब्बियाँ रखने के अधिकार छीन लिये गए। जर्मनी के सारे उपनिवेश विजित राष्ट्रों ने आपस में बाँट लिये। टोगा और कैमरून को ब्रिटेन और फ्रांस ने आपस में बाँट लिया। दक्षिण-पश्चिम अफ्रिका और पूर्वी अफ्रिका में स्थित जर्मन उपनिवेश ब्रिटेन, बेल्जियम, दक्षिण अफ्रिका और पुर्त्तगाल को दे दिए गए। प्रशांत क्षेत्र में स्थित उसके उपनिवेश तथा चीन में उसके सारे अधिकार क्षेत्र जापान को दे दिए गए। युद्ध के दौरान चीन मित्र राष्ट्रों का सहयोगी था और पेरिस सम्मेलन में उसका प्रतिनिधि भी शामिल हुआ था। परन्तु जर्मनी के अधिकार या नियंत्रण करने वाले चीनी क्षेत्र चीन को नहीं लौटाए गए बल्कि वे जापान को दे दिए गए। युद्ध में मित्र राष्ट्रों को जो हानि एवं क्षति हुई थी, उसका हर्जाना भी जर्मनी को भरना था। इसके लिए 6 अरब 10 करोड़ पौंड की भारी रकम निश्चित की गई।

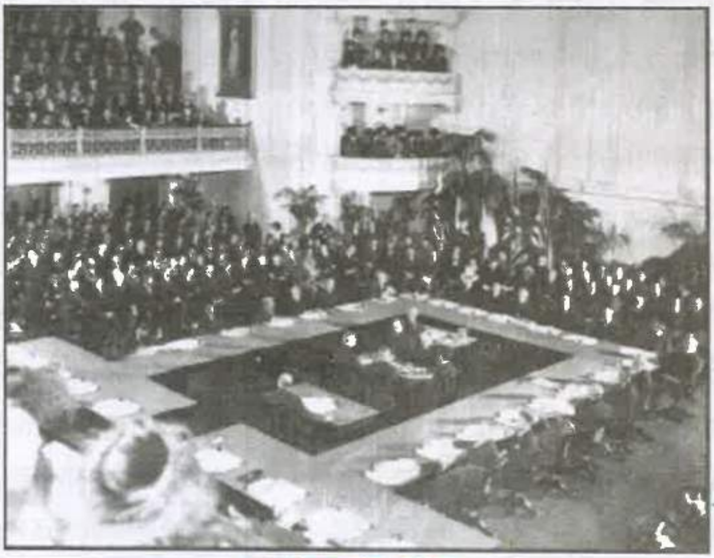

वर्साय की संधि

जर्मनी के सहयोगियों के साथ अलग से संधियाँ की गईं। आस्ट्रिया-हंगरी को विभाजित कर दिया गया। आस्ट्रिया से कहा गया कि वह हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया और पोलैंड की स्वाधीनता को मान्यता दे। उसे अपने क्षेत्र भी इन देशों को और इटली को देने पड़े। बाल्कन क्षेत्र में अनेक परिवर्त्तन किए गए। अनेक राज्य बनाए गए और उनके बीच भू-भागों का हस्तांतरण किया गया। बल्टिक राज्य, जो रूसी साम्राज्य के भाग थे, स्वतंत्र घोषित कर दिए गए। तुर्की के साथ की गई संधि में तुर्की साम्राज्य को पूरी तरह छिन्न-भिन्न कर दिया गया। ब्रिटेन को फिलिस्तीन और मेसोपोटामिया (इराक) दे दिए गए और फ्रांस को सीरिया दे दिया गया। क्षेत्रों और देशों का यह हस्तांतरण जिस व्यवस्था के तहत् किया गया उसे शासन-देश (मैंडेट) व्यवस्था कहा जाता है। सिद्धान्त रूप में 'शासनदेश (मैंडेट), जाने वाली शक्तियाँ अर्थात् ब्रिटेन और फ्रांस को इन देशों का शासन चलाना था। वास्तव में उनका शासन उपनिवेशों की तरह किया जाने लगा। तुर्की के क्षेत्र का अधिकांश भाग यूनान और इटली को दे दिया गया और खुद तुर्की को एक छोटा सा राज्य बनाने का निर्णय लिया गया।

इन शांति-संधियों का एक प्रमुख अंग था राष्ट्रसंघ (लीग ऑफ नेशंस) का प्रसंविदा। अमेरिका के राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन के चौदह सूत्री सिद्धान्त में इसकी चर्चा थी। इसके उद्देश्य थे-शांति और सुरक्षा बनाए रखना, अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों का शांतिपूर्ण निपटारा करना और सदस्य देशों को "युद्ध का सहारा न लेने के लिए" बाध्य करना। इसका एक महत्वपूर्ण प्रावधान प्रतिबंधों से संबंधित था, इसके अनुसार किसी भी आक्रमणकारी देश के खिलाफ आर्थिक और सैनिक कार्रवाई करना शामिल था। इसके प्रावधानों में सदस्य राष्ट्रों के श्रमिकों की दशा और सामाजिक स्थिति को सुधारने के उपायों को शामिल किया गया।

युद्ध और शांति-संधियों के परिणाम :

अब तक के हुए युद्धों में प्रथम विश्वयुद्ध सबसे भयावह था और इसकी व्यापकता और बरबादी त्रासदपूर्ण थी। विभिन्न अनुमानों के अनुसार लगभग 45 करोड़ लोग इस विश्वयुद्ध से प्रभावित हुए। लड़ाई में या अन्यथा मरने वालों की संख्या 90 लाख बतलाई जाती है, जो युद्ध में भाग लेने वालों की संख्या का लगभग सातवाँ भाग है। लाखों लोग अपंग हो गए। हवाई हमलों, अकालों और महामारियों से भारी संख्या में असैनिक लोग मारे गए। विभिन्न देशों की राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई। इससे अनेक सामाजिक समस्याएँ खड़ी हुईं।

नयी राजनीतिक-व्यवस्था का उदय :

प्रथम विश्वयुद्ध और इसके बाद सम्पन्न शांति-संधियों ने अनेक देशों की राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्त्तन किया। कई राजतंत्र नष्ट हो गए, कई देशों में लोकतांत्रिक व्यवस्था का उदय हुआ एवं नई साम्यवादी सरकार से विश्व-जनमत रू-ब-रू हुआ। तीन शासक वंश नष्ट हो गए यथा-रूस का रोमानोव शासन, जर्मनी का होहेनजोलर्न और आस्ट्रिया-हंगरी में हेब्सबर्ग के शासक-वंश समाप्त हो गए। युद्ध के कुछ ही समय बाद तुर्की में उस्मानिया वंश का शासन समाप्त हो गया। आस्ट्रिया और हंगरी दो अलग-अलग स्वतंत्र राज्य बन गए। चेकोस्लोवाकिया और युगोस्लाविया स्वतंत्र देशों के रूप में उभरे। पोलैंड स्वतंत्र देश के रूप में सामने आया।

यूरोप का वर्चस्व समाप्त हुआ और संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व शक्ति बनकर उभरा। वह सैनिक और आर्थिक दृष्टि से यूरोप को पीछे छोड़ दिया। कुछ ही समय बाद विश्व-रंगमंच पर सोवियत रूस भी विश्व-शक्ति के रूप में सामने आया। एशिया और अफ्रिका के देशों में चल रहे स्वाधीनता आंदोलन को भी बल मिला।

यूरोप की श्रेष्ठता का दावा, इस युद्ध से धुमिल हुई क्योंकि साम्राज्यवादी यूरोप सदैव इस प्रचार को हवा देता था कि यूरोप और यूरोपीय लोग श्रेष्ठ हैं। रूस-जापान का 1905 का युद्ध और इसमें रूस की पराजय से भी यह मिथक टूटा, साथ ही एशिया और अफ्रिका के देशों में स्वाधीनता आंदोलन तीव्र हुए।

द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि तैयार

प्रथम विश्वयुद्ध की भयावहता और व्यापकता से लोग आक्रांत थे। सभी राष्ट्र भविष्य में ऐसे किसी युद्ध की कल्पना से बचना चाहते थे। इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय संगठन भी बनाया गया। लेकिन वर्साय और पेरिस की संधियों ने अगले विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी। जिस तरह से पराजित राष्ट्रों पर निर्णय थोपे गये थे, उनका अपमान किया गया था, इससे यही स्पष्ट था कि अगला विश्वयुद्ध होकर रहेगा। यद्यपि इतना शीघ्र इसकी शुरूआत हो जाएगी, इसकी कल्पना शायद किसी को नहीं थी। प्रथम विश्वयुद्ध साम्राज्यवाद को समाप्त नहीं कर सका, बल्कि इसकी समाप्ति के उपरांत जो समझौते हुए उससे साम्राज्यवाद का वेग और प्रचंड हुआ। यद्यपि युद्ध को रोकने के लिए 'राष्ट्रसंघ' नामक अंतर्राष्ट्रीय संस्था की स्थापना की गई परन्तु यह अपनी आरम्भिक छोटी-मोटी सफलताओं के बावजूद भी युद्ध को रोकने में सफल नहीं हो सका।

द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-1945) :

पेरिस के शांति समझौते से असंतुष्ट राज्यों ने 1936 के अंत तक इस व्यवस्था के अन्तर्गत अपने कर्त्तव्यों से स्वयं को मुक्त कर लिया था। अब वे अपनी क्षति–पूर्ति का दावा कर रहे थे, जिसका अर्थ क्षति-पूर्ति न होने पर केवल युद्ध ही हो सकता था। इस खतरे के कारण ब्रिटिश सरकार जो अपनी ओर से निःशस्त्रीकरण करके एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहती थी, ऐसा करने का इरादा छोड़ दिया और प्रतिरक्षा के नाम पर सशस्त्रीकरण में जुट गयी। राष्ट्रसंघ इन तमाम घटनाओं का मौन और मूक साक्षी बना रहा और अंततः वह घड़ी आ ही गयी। द्वितीय विश्वयुद्ध के कारणों की चर्चा के क्रम में प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति और पेरिस संधि से लेकर 1939 तक के घटनाक्रम का उल्लेख प्रासंगिक होगा, जिसकी अपरिहार्य परिणति के रूप में द्वितीय विश्वयुद्ध हुआ।

वर्साय संधि की विसंगतियाँ :

द्वितीय विश्वयुद्ध का बीजारोपण वर्साय संधि में ही हो गया था। पेरिस शांति सम्मेलन में ही सिद्धान्त की बातों को विजित राष्ट्र गुप्त संधियों के माध्यम से झुठलाते भी रहे। सोवियत रूस ने गुप्त संधि की शर्त्तों का भंडाफोड़ कर जहाँ एक ओर विजित राष्ट्रों की हकीकत को उजागर किया वहीं पराजित राष्ट्र सत्य से परिचित हो बौखलाहट से भर गए।

वचन विमुखता :

राष्ट्रसंघ के विधान पर हस्ताक्षर कर सभी सदस्य–राज्यों ने वादा किया था कि वे सामूहिक रूप से सबकी प्रादेशिक अखंडता और राजनीतिक स्वतंत्रता की रक्षा करेंगे। अवसर आने पर सब समर्थ राष्ट्र पीछे हटते गये, रूस को सदस्य नहीं बनाया गया था, अमेरिका सदस्य बनने से इनकार कर दिया था। चीन, जापान की साम्राज्यवादी नीतियों का शिकार होता रहा और इटली अबीसीनिया को रौंदता रहा। फ्रांस, चेकोस्लोवाकिया के विनाश में सहायक हुआ। हिटलर चेक राज्यों को हड़पता रहा और ब्रिटेन तथा फ्रांस देखते रहे। धोखेबाजी की नीति से आक्रामक–प्रवृत्तियों को काफी प्रोत्साहन मिला। जापान ने चीन पर आक्रमण कर मंचूरिया पर अधिकार कर लिया। अबिसीनिया मुसोलिनी की आक्रामक नीति का शिकार हुआ। मुसोलिनी का सफलता प्राप्त करते देख हिटलर ने आस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया पर धावा बोल दिया। उसने पोलैंड पर भी चढ़ाई कर दी और इसके साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ हो गया।

गृहयुद्ध :

गुटबंदी और सैनिक संधियाँ भी द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए जिम्मेवार थीं। शांति बनाए रखने के नाम पर यूरोप में अनेक संधियाँ हुईं। जिसके परिणामस्वरूप यूरोप पुनः दो गुटों में बँट गया। एक गुट का नेता जर्मनी बना और दूसरा गुट का नेता फ्रांस बना। इस गुटबंदी के पीछे सैद्धान्तिक समानता और हितों की एकता थी। इटली, जापान और जर्मनी एक सिद्धान्त फासिज्म में विश्वास रखते थे और उनकी नीति भी समान रूप से-प्रसारवादी थी। ये राष्ट्र वर्साय की संधि से क्षुब्ध थे और हर हाल में थोपी गई शर्त्तों से मुक्ति चाहते थे। इसके विपरीत फ्रांस, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड इत्यादि देशों के हित एक थे, क्योंकि उन्हें वर्साय की संधि से बहुत लाभ हुआ था और ये हर हाल में उसे कायम रखना चाहते थे। इंगलैंड शुरू में इस गुट में शामिल नहीं था, लेकिन परिस्थितिवश उसे भी इस गुट में सम्मिलत होना पड़ा। रूस तब तक अछूता था, दोनों गुट उसे संदेह की नजरों से देखते थे, लेकिन परिस्थितिवश जर्मनी ने रूस की ओर हाथ बढ़ाया। इस तरह गुटबंदी से सम्पूर्ण यूरोप का माहौल विषाक्त हो गया था। विषाक्त माहौल में शंका के लिए हर छोटी बात महत्वपूर्ण थी।

हथियारबंदी :

गुटबंदी और संशय के माहौल में प्रत्येक राष्ट्र अपने को असुरक्षित महसूस कर रहे थे। परिणामस्वरूप सशस्त्रीकरण को बढ़ावा मिला। ब्रिटिश सरकार, जो निःशस्त्रीकरण का उदाहरण पेश करना चाहती थी, के वित्त मंत्री ने **चेम्बरलिन** ने मार्च 1937 में घोषणा की कि प्रतिरक्षा व्यय की पूर्त्ति अब केवल कर लगाकर नहीं की जाएगी। उसने इस प्रयोजन के लिए चालीस करोड़ पौंड का ऋण लेने तथा पाँच वर्ष की अवधि में प्रतिरक्षा पर डेढ़ अरब पौंड व्यय करने का प्रस्ताव किया। प्रधानमंत्री बाल्डविन ने इन प्रस्तावों का समर्थन यह कह कर किया था कि उनका उद्देश्य आक्रमण को रोकना है। प्रत्येक देश का रक्षा बजट बढ़ रहा था और नए-नए हथियारों से प्रत्येक राष्ट्र अपनी सेना को सुसज्जित कर रहा था। नौ-सेना और वायु सेना पर जोर दिया जाने लगा था। इस सैनिक तैयारी ने असुरक्षा की भावना का संचार किया।

राष्ट्रसंघ की असफलता :

राष्ट्रसंघ की भ्रामक शक्तियाँ और सदस्य-राष्ट्रों के सहयोग का अभाव भी द्वितीय विश्वयुद्ध का कारण बना। राष्ट्रसंघ ने छोटे-छोटे राज्यों के मामलों को आसानी से सुलझा दिया, लेकिन बड़े राष्ट्रों के मामले में उसने अपने को अक्षम पाया और अंततः उसको इस कार्य के लिए समर्थ और शक्तिशाली राष्ट्रों का सहयोग नहीं मिला। हर निर्णायक कार्रवाई की घड़ी में शक्तिशाली राष्ट्रों ने अपने निहित स्वार्थ में हाथ खड़ा कर लिए। इस प्रकार राष्ट्रसंघ की असफलता ने द्वितीय विश्वयुद्ध का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

विश्वव्यापी आर्थिक-मंदी :

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 1929-30 के काल में विश्वव्यापी आर्थिक मंदी आया। इससे उद्धार का कोई रास्ता निकट भविष्य में दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था। 1931 में यह अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया थी। 1929 के शरद काल में अमेरिका से यूरोप को ऋण मिलना बिल्कुल बंद हो जाना इस संकट की प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय अभिव्यक्ति थी। इसके बाद ही सारे विश्व में क्रय-शक्ति का ह्रास हुआ जिसके परिणामस्वरूप कीमतों में व्यापक और अनिष्टकारी गिरावट हुई। बेकारी के आँकड़े हर देश में दिन-दूने रात-चौगुने बढ़ गये।

नवीन विचारधाराओं (हिटलर एवं मुसोलिनी) का उदय :

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यूरोप में नाजीवाद और फासीवाद का उदय हुआ। इन नए सिद्धान्तों के आधार पर जर्मनी में हिटलर के नेतृत्व में नाजी सरकार बनी और फासीवाद के सिद्धांत के आधार पर मुसोलनी के नेतृत्व में इटली में सरकार बनी। ये दोनों सिद्धान्त राष्ट्र के गौरव और शक्ति पर बल देते थे। फलतः इन दोनों राष्ट्रों ने दूसरे राष्ट्रों पर आक्रमण करना शुरू किया जिससे विश्वयुद्ध की परिस्थितियां पैदा हुई। इन दोनों राष्ट्रों ने राष्ट्रीय गौरव के लिए साम्राज्यवादी लिप्सा को ही आधार बनाया। जापान, जर्मनी और इटली अपने साम्राज्य का विस्तार कर अपनी आर्थिक परेशानियों को दूर करना

हिटलर

चाहते थे और अपने राष्ट्र का नाम गौरवान्वित करना चाहते थे।

मुसोलिनी

जापान 19 वीं शताब्दी के अंत तक एक शक्तिशाली और औद्योगिक देश बन चुका था। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात उसे भी प्रादेशिक लाभ हुआ। लेकिन उसके लिए उपनिवेश निहायत जरूरी हो गया था जिसके कारण वह अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए कोशिश करने लगा। 1931 ई० में उसने चीन पर आक्रमण कर उसके एक क्षेत्र मंचूरिया पर कब्जा कर लिया। उसका यह आक्रमणकारी अभियान चलता रहा और वह जर्मनी एवं इटली का सहयोगी बनकर द्वितीय विश्वयुद्ध में बर्मा इत्यादि को जीतता हुआ भारत पर भी आक्रमण करने की योजना बनाने लगा। इस तरह जर्मनी, इटली और जापान की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा द्वितीय विश्वयुद्ध का कारण बनी।

तुष्टिकरण की नीति :

इंगलैंड की तुष्टिकरण की नीति भी बहुत हद तक द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए जिम्मेवार थी। पश्चिमी पूँजीवादी देश साम्यवादी रूस को नफरत की दृष्टि से देखते थे। वे चाहते थे कि हिटलर किसी भी तरह सोवियत रूस पर हमला कर दे, जिससे दोनों कमजोर हो जाए और तब वे हस्तक्षेप करके दोनों शक्ति को बर्बाद कर देंगे। इसलिए शुरू में पश्चिम के राष्ट्र हिटलर की माँगों को स्वीकार करते रहे और जब इन लोगों ने देखा कि हिटलर की माँग और महत्वाकांक्षा बढ़ती जा रही है तो अपना हाथ खींचना शुरू किया। तब तक देर हो चुकी थी। तुष्टिकरण की दिशा में अंतिम कदम म्युनिख समझौता था। हिटलर सुडेटनलैंड पर अधिकार करना चाहता था। इसके लिए 1938 ई० में म्युनिख में हिटलर और मुसोलनी मिले जहाँ इंगलैण्ड और फ्रांस ने हिटलर के सुडेटनलैंड पर अधिकार को मान्यता दे दी। 1939 में हिटलर ने पूरे चेकोस्लोवाकिया पर अधिकार कर लिया। उसके बाद उसने डेंजिंग बन्दरगाह और पोलिश गलियारे की मांग पोलैंड से की। पोलैंड इसके लिए तैयार नहीं हुआ, जिसकी वजह से जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया।

युद्ध का आरंभ और घटनाक्रम :

1 सितम्बर 1939 को जैसे ही जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया, इसके साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हो गया। ब्रिटेन और फ्रांस ने दो दिन बाद 3 सितम्बर 1939 को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

रूस अपनी सुरक्षा के लिए बाल्टिक के तीन राज्यों एस्टोनिया, लैटविया और लिथुआनिया पर अपना प्रभाव जमाना चाहता था। सितम्बर-अक्टूबर के महीनों में उपर्युक्त तीनों देशों के विदेश मंत्रियों को मास्को बुलाया गया और तीनों विदेश मंत्रियों ने सोवियत संघ से पारस्परिक सहयोग की संधि कर ली। इस संधि के अनुसार सोवियत संघ की उपर्युक्त तीनों राज्यों में सेना रखने की अनुमति मिल गई। बदले में सोवियत संघ ने इन राज्यों की प्रादेशिक अखंडता को बनाए रखने का वादा किया।

फिनलैंड पर अपना प्रभाव रखना रूस अपनी सुरक्षा के लिए आवश्यक समझता था। रूस और फिनलैंड में इस विषय पर वार्ता भी चल रही थी, लेकिन इसी बीच दोनों में वार्ता भंग हो गई और सोवियत संघ ने फिनलैंड पर आक्रमण कर दिया। 12 मार्च 1940 को फिनलैंड ने आत्मसमर्पण कर दिया। उसी दिन फिनलैंड और सोवियत संघ में एक संधि हुई जिसके अनुसार सोवियत रूस को वे सारी सुविधाएँ प्राप्त हो गई, जिसको वह अपनी सुरक्षा के लिए आवश्यक समझता था।

नार्वे, डेनमार्क, हालैंड, बेल्जियम और फ्रांस पर विजय :

9 अप्रैल 1940 को जर्मनी ने नार्वे और डेनमार्क को हराया और उनकी सेना आगे बढ़ने लगी । जून 1940 तक बेल्जियम और फ्रांस पर कब्जा जमा लिया। 22 जून 1940 को फ्रांस ने आत्मसमर्पण कर दिया। इसी बीच इटली भी जर्मनी की ओर से युद्ध में शामिल हो गया था।

रूस पर आक्रमण

22 जून 1941 को जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया और एक बड़े भू-भाग को अपने कब्जे में कर लिया। साथ ही साथ पुनः जर्मन सेना मास्को की ओर बढ़ने लगी मगर रूस ने इसका डटकर मुकाबला किया और जर्मनी को पीछे हटना पड़ा। जब जर्मनी को मास्को क्षेत्र अपनाने में विफलता मिली तो उसने रूस के दक्षिणी भाग पर आक्रमण किया। अगस्त 1942

ई० में जर्मन सेना स्टालिनग्राद के निकट तक पहुँच गई। यह युद्ध करीब 5 महीनों तक चला। अगस्त सितम्बर में स्टालिन ने अपनी सुरक्षा व्यवस्था का पुनर्गठन किया और रूसी सेना एवं नागरिकों को नए उत्साह से शत्रु को रोकने की प्रेरणा दी। आगे ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने रूस जाकर स्टालिन को मित्र-राष्ट्रों की योजना समझाई और इसकी स्वीकृति प्राप्त कर ली। तदुपरांत रूसी सेनाओं ने जर्मनी के विरुद्ध प्रबल प्रत्याक्रमण आरम्भ कर दिये। अंततः फरवरी में रूस की सेना जर्मनी को हराने में सफल हुई। फरवरी 1943 ई० में हजारों जर्मन अफसर और सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

जापान द्वारा पर्ल हार्बर पर आक्रमण

जापान ने 7 दिसम्बर 1941 को हवाई द्वीप स्थित पर्ल हार्बर के अमेरिकी नौसैनिक अड्डे पर जबर्दस्त हमला किया। इसके कारण अमेरिका का प्रशान्त महासागर स्थित बेड़ा जो वहाँ रखा गया था तहस-नहस हो गया। जिसकी वजह से अमेरिका ने 8 दिसम्बर 1941 को जापान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। उसके बाद जर्मनी और इटली ने अमेरिका के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। अमेरिका के युद्ध में शामिल होने के बाद अमेरिकी महाद्वीप के सारे देश जर्मनी, इटली और जापान (धुरी राष्ट्र) के विरुद्ध युद्ध में शामिल हो गये।

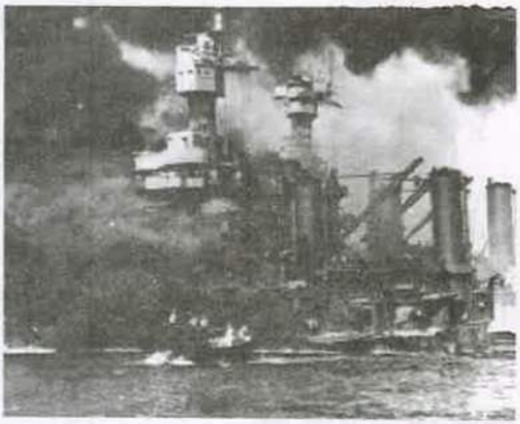

अमेरिका के पर्ल हॉर्बर बन्दरगाह पर जापानी आक्रमण का दृश्य

दूसरा मोर्चा :

यूरोप में 1942 ई० के बाद जर्मनी और सोवियत संघ के बीच घमासान लड़ाई हुई। इसमें जर्मनी बुरी तरह पराजित हुआ। जर्मनी के इस पराजय में द्वितीय मोर्चा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। दूसरे मोर्चे में अमेरिका, इंगलैंड, रूस और फ्रांस आते थे। ये सब मिलकर जर्मनी को पराजित करने का प्रयास किये और 6 जून 1944 को जर्मन सेना परास्त हो गयी। इसके पहले ही इटली पूर्णतः पराजित हो मित्र राष्ट्रों से संधि कर चुका था। अंततः 07 मई 1945

ई० को जर्मनी ने आत्मसमर्पण कर दिया।

मित्र राष्ट्रों ने जुलाई 1945 ई० में जापान पर भीषण आक्रमण किया। 6 अगस्त 1945 को अमेरिका ने युद्ध के दौरान अत्यधिक विकसित हथियार एटम बम जापान के हिरोशिमा नामक शहर पर गिराया। फलतः हिरोशिमा का नामोनिशान मिट गया। दूसरा एटम बम 9 अगस्त 1945 को नागासाकी शहर पर गिराया गया और नागासाकी भी नेस्तनाबुद हो गया। जापान के सामने आत्मसमर्पण के सिवा कोई विकल्प नहीं था और जापान ने 2 सितम्बर 1945 को आत्मसमर्पण कर दिया, इसके साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हो गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय यूरोप

द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम

धन-जन की हानि : इस युद्ध में व्यापक धन-जन की हानि हुई। यह इतिहास का सबसे विनाशकारी युद्ध था। फासीवादियों ने यूरोप के एक बड़े भाग को बहुत बड़ा कब्रिस्तान बना रखा था। लगभग 60 लाख यहूदियों का जर्मनी ने मौत के घाट उतार दिया था। लाखों लोगों की हत्या यंत्रणा शिविरों में कर दी गयी। जापान पर की गई बमबारी और इससे हुए क्षति का आकलन, संभव नहीं था। इस युद्ध में जितने लोग काल कलवित हुए उसका इतिहास में कोई उदाहरण नहीं मिलता। द्वितीय विश्वयुद्ध में 5 करोड़ से अधिक लोग मौत के घाट उतार दिए गए। इसमें लगभग 2.2 करोड़ सैनिक और 2.8 करोड़ से अधिक नागरिक शामिल थे। लगभग 1.2 करोड़ लोग यंत्रणा शिविरों या फासिवादियों के आतंक के कारण मारे गये। पोलैंड के 60 लाख लोग मारे गये जो कुल जनसंख्या का लगभग 20 प्रतिशत थी। इससे भयावह नुकसान सोवियत संघ का हुआ। उसके दो करोड़ लोग मारे गये, जो आबादी का दसवाँ हिस्सा था। जर्मनी के लगभग 60 लाख से अधिक मारे गए जो आबादी का लगभग दसवाँ भाग था।

मानवीय क्षति से अलग बड़े पैमाने पर भौतिक संसाधनों का भी क्षय हुआ। अनेक

प्राचीन नगर पूरी तरह नष्ट हो गये। द्वितीय विश्वयुद्ध की कुल लागत बहुत ऊँची थी, अनुमान के अनुसार यह लागत लगभग 13 खरब 84 अरब 90 करोड़ डालर थी।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान तबाही के लिए नए-नए हथियारों का विकास और उपयोग हुआ। इनमें सबसे भयानक था-परमाणु बम। परमाणु बम का सबसे पहले इस्तेमाल संयुक्त राज्य अमेरिका ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापान के खिलाफ किया। परमाणु बम का पहला परीक्षण जुलाई 1945 में किया गया। जर्मनी तब तक आत्मसमर्पण कर चुका था।

यूरोपीय श्रेष्ठता और उपनिवेशों का अंत– द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद एशिया महाद्वीप से यूरोपीय राष्ट्रों की प्रभुता लगभग समाप्त हो गई। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत, श्रीलंका, बर्मा, मलाया, हिंदेशिया, मिस्र इत्यादि ने स्वतंत्रता पाई। यूरोपीय श्रेष्ठता का भी अंत हुआ। कहा जाता है कि इंगलैंड के राज्य में कभी सूरज नहीं डूबता था, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से वह डूबने लगा।

इंगलैंड की शक्ति का ह्रास और रूस तथा अमेरिका की शक्ति में वृद्धि– प्रत्यक्ष रूप से तो युद्ध में जर्मनी, जापान और इटली की हार हुई थी, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से इस युद्ध में इंगलैंड की भी पराजय हुई। युद्ध के बाद इंगलैंड विश्व की सबसे बड़ी शक्ति नहीं रह गया। इंगलैंड के उपनिवेश मुक्त हो गए, इंगलैंड की शक्ति और संसाधन सीमित हो गए और इसके बदले में अमेरिका और रूस अपनी असीम आर्थिक संसाधनों के साथ विश्व की राजनीति में शक्तिशाली देश के रूप में उभरे।

संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना– द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरांत संयुक्त राष्ट्र संघ का निर्माण कर विश्व शांति को कायम करने की चेष्टा गई की। द्वितीय विश्वयुद्ध ने शांति और अशांति के दो निर्णायक केन्द्र परमाणु बमों का विकास व शस्त्रीकरण और संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना को सामने लाया, जो आज भी सम्पूर्ण विश्व को नियंत्रित-निर्देशित कर रहे हैं।

विश्व में गुटों का निर्माण– पहले विश्व की राजनीति में इंगलैंड छाया हुआ था, लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विश्व साम्यवादी और पूँजीवादी खेमे में बँट गया। साम्यवादी खेमा का नेतृत्व सोवियत रूस कर रहा था, तो पूँजीवादी खेमा का नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका कर रहा था। एक गुटनिरपेक्ष राज्यों के संघ के रूप में तीसरा खेमा सामने आया, यह मूलतः नवोदित स्वतंत्र और विकासशील राष्ट्र थे। पूँजीवादी राष्ट्र और उनकी साम्राज्यवादी मंशा का स्वरूप भी बदल गया। अब पूँजीवादी राष्ट्र सीधे-सीधे उपनिवेशों की स्थापना से बचने लगे और औपनिवेशिक देशों के आर्थिक तंत्र तक अपने को केन्द्रित करने लगे। इस प्रकार साम्राज्यवाद का भी स्वरूप बदला।

अभ्यास :

सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग, घ आदि) लिखें।

1. प्रथम विश्वयुद्ध कब आरंभ हुआ?
   (क) 1941 ई०   (ख) 1952 ई०
   (ग) 1950 ई०   (घ) 1914 ई०
2. प्रथम विश्वयुद्ध में किसकी हार हुई?
   (क) अमेरिका की   (ख) जर्मनी की
   (ग) रूस की   (घ) इंगलैंड की
3. 1917 ई० में कौन देश प्रथम विश्व युद्ध से अलग हो गया?
   (क) रूस   (ख) इंगलैंड
   (ग) अमेरिका   (घ) जर्मनी
4. वर्साय की संधि के फलस्वरूप इनमें किस महादेश का मानचित्र बदल गया?
   (क) यूरोप का   (ख) आस्ट्रेलिया का
   (ग) अमेरिका का   (घ) रूस का
5. त्रिगुट समझौते में शामिल थे–
   (क) फ्रांस ब्रिटेन और जापान   (ख) फ्रांस, जर्मनी और आस्ट्रिया
   (ग) जर्मनी, आस्ट्रिया और इटली   (घ) इंगलैंड, अमेरिका और रूस
6. द्वितीय विश्वयुद्ध कब आरंभ हुआ?
   (क) 1939 ई० में   (ख) 1941 ई० में
   (ग) 1936 ई० में   (घ) 1938 ई० में
7. जर्मनी को पराजित करने का श्रेय किस देश को है?
   (क) फ्रांस को   (ख) रूस को
   (ग) चीन को   (घ) इंगलैंड को
8. द्वितीय विश्वयुद्ध में कौन-सा देश पराजित हुआ?
   (क) चीन   (ख) जापान
   (ग) जर्मनी   (घ) इटली
9. द्वितीय विश्वयुद्ध में पहला एटम बम कहाँ गिराया गया था?
   (क) हिरोशिमा पर   (ख) नागासाकी पर
   (ग) पेरिस पर   (घ) लन्दन पर

10. **द्वितीय विश्वयुद्ध कब अन्त हुआ?**

(क) 1939 ई० को (ख) 1941 ई० को

(ग) 1945 ई० को (घ) 1938 ई० को

II. उपयुक्त शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. द्वितीय विश्वयुद्ध के फलस्वरूप .... साम्राज्यों का पतन हुआ।
2. जर्मनी का .... पर आक्रमण द्वितीय विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण था।
3. धुरी राष्ट्रों में .... ने सबसे पहले आत्मसमर्पण किया।
4. .... की संधि की शर्तें द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए उत्तरदायी थी।
5. अमेरिका ने दूसरा एटम बम जापान के .... बन्दरगाह पर गिराया था।
6. .... की संधि में ही द्वितीय विश्व युद्ध के बीज निहित थे।
7. प्रथम विश्व युद्ध के बाद .... एक विश्वशक्ति बनकर उभरा।
8. प्रथम विश्व युद्ध के बाद मित्रराष्ट्रों ने जर्मनी के साथ .... की संधि की।
9. राष्ट्रसंघ की स्थापना का श्रेय अमेरिका के राष्ट्रपति .... को दिया जाता है।
10. राष्ट्रसंघ की स्थापना .... ई० में की गई।

III. लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. प्रथम विश्व युद्ध के उत्तरदायी किन्हीं चार कारणों का उल्लेख करें।
2. त्रिगुट (Triple Alliance) तथा त्रिदेशीय संधि (Triple Entente) में कौन-कौन से देश शामिल थे। इन गुटों की स्थापना का उद्देश्य क्या था?
3. प्रथम विश्व युद्ध का तात्कालिक कारण क्या था?
4. सर्वस्लाव आन्दोलन का क्या तात्पर्य है?
5. उग्र राष्ट्रीयता प्रथम विश्व युद्ध का किस प्रकार एक कारण था?
6. ''द्वितीय विश्वयुद्ध प्रथम विश्वयुद्ध की ही परिणति थी।'' कैसे?

7. द्वितीय विश्वयुद्ध के लिए हिटलर कहाँ तक उत्तरदायी था?
8. द्वितीय विश्वयुद्ध के किन्हीं पाँच परिणामों का उल्लेख करें।
9. तुष्टिकरण की नीति क्या है?
10. राष्ट्रसंघ क्यों असफल रहा?

IV. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. प्रथम विश्व युद्ध के क्या कारण थे? संक्षेप में लिखें।
2. प्रथम विश्व युद्ध के क्या परिणाम हुए?
3. क्या वर्साय संधि एक आरोपित संधि थी?
4. विस्मार्क की व्यवस्था ने प्रथम विश्वयुद्ध का मार्ग किस तरह प्रशस्त किया ?
5. द्वितीय विश्वयुद्ध के क्या कारण थे। विस्तारपूर्वक लिखें।
6. द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामों का उल्लेख करें।